संस्कृत-धारा

प्रथमो भागः

कक्षा 6 के लिए संस्कृत की पाठ्यपुस्तक

(मातृभाषा हिंदी के साथ सयुक्त पाठ्यक्रम)

संपादक

कमलाकान्त मिश्र

उर्मिल खुगर

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जुलाई 2002
आषाढ़ 1924

PD 50T DRH

ISBN 81-7450-040-5

एन सी ई आर टी के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन सी ई आर टी कैंपस	108, 100 फीट रोड होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी डब्ल्यू सी कैंपस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32 बी टी रोड सुखचर
नई दिल्ली 110016	बैंगलूर 560085	अहमदाबाद 380014	24 परगना 743179

प्रकाशन सहयोग

संपादन	:	दयाराम हरितश
उत्पादन		साई प्रसाद
		सुबोध श्रीवास्तव

चित्र एवं आवरण
बालकृष्ण

रु. 14.00

एन सी ई आर टी. वाटर मार्क 70 जी.एस.एम पेपर पर मुद्रित ।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा सरस्वती ऑफसेट प्रिन्टर्स प्रा लि., A-5, नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस–II, नई दिल्ली 110 028 द्वारा मुद्रित

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थाया संस्कृतस्य महत्त्वमुदिश्य विद्यालयेषु संस्कृतशिक्षणार्थम् आदर्शपाठ्यक्रम - पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद· सामाजिक- विज्ञान-मानविकी-शिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्त राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रम निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मीयन्ते । संस्कृत प्रायेणाधुनिकभारतीयभाषाणा जननी सम्पोषिका च । अत एव विद्यालयेषु उच्चप्राथमिकस्तरे मातृभाषारूपेण पाठ्यमानाभि· आधुनिक- भारतीयभाषाभि सह संस्कृतस्य शिक्षणमावश्यकम् इति मत्वा संस्कृतभाषाया मातृभाषया सह संयुक्तपाठ्यक्रमो विकासित । अस्मिन्नेव क्रमे षष्ठवर्गीयच्छात्राणां कृते हिन्दीभाषया (मातृभाषया) सह संस्कृतस्य संयुक्तपाठ्यक्रमत्वेन रोचकशैल्या भाषातत्त्वमयान् नैतिकमूल्ययुक्तान् च पाठान् समायोज्य भूमिका-टिप्पणी-प्रश्नाभ्यास-योग्यताविस्तरैश्च सह प्रस्तूयते **संस्कृत-धारा** (प्रथमो भाग) नाम पाठ्यपुस्तकम्। अत्र छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलाना विकासोऽस्माकं लक्ष्यम् । छात्रा संस्कृते निहित जीवनोपयोगिज्ञानं संस्कृतमाध्यमेन सरलतया च प्राप्नुयु तेषु नैतिकमूल्यविकासोऽपि भवेद् एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहित ।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यै· विशेषज्ञै· अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोग कृत·, तान् प्रति परिषदिय स्वकार्तज्ञ्यं प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणा कृते उपयुक्ततरं विधातुम् अनुभविनां विदुषा संस्कृत-शिक्षकाणा च सत्परामर्शा· सदैवास्माक स्वागतार्हा· ।

जगमोहनसिंहराजपूतः
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

नवदेहली
फरवरी, 2002

पाठ्यपुस्तक-निर्माण-समिति

पाठ्यसामग्री-निर्माण-समिति

सामजिक विज्ञान एव मानविकी शिक्षा विभाग

कमलाकान्त मिश्र
प्रोफेसर, सस्कृत (सयोजक)

उर्मिल खुंगर
सेलेक्शन ग्रेड लेक्चरार, सस्कृत

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी
रीडर, सस्कृत

पाण्डुलिपि-समीक्षा-सशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

1 **आद्याप्रसाद मिश्र**
पूर्व कुलपति
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

2 **कैलाशपति त्रिपाठी**
अवकाश प्राप्त अध्यक्ष, साहित्य विभाग
सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय,
वाराणसी

3 **पुष्पेन्द्र कुमार**
अवकाश प्राप्त प्रोफेसर एव अध्यक्ष,
सस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

4. **राजेन्द्र मिश्र**
प्रोफेसर, सस्कृत विभाग, हि प्र.
विश्वविद्यालय, शिमला

5. **योगेश्वर दत्त शर्मा**
रीडर, सस्कृत, हिन्दू कॉलेज,
दिल्ली

6 **वासुदेव शास्त्री**
अवकाश प्राप्त प्रभारी, सस्कृत,
रा शै अनु प्र.स , उदयपुर

7. **शशिप्रभा गोयल**
अवकाश प्राप्त रीडर, सस्कृत,
रा.शै.अनु प्र प ,
दिल्ली

8 **सतोष कोहली**
उपप्रधानाचार्य, सर्वोदय कन्या विद्यालय,
कैलाश एन्कलेव, रोहिणी, दिल्ली

9. **परमानन्द झा**
पी जी टी सस्कृत राजकीय उच्चतर
माध्यमिक बाल विद्यालय,
आदर्श नगर, दिल्ली

10 **सुगन्ध पाण्डेय**
टी.जी टी, सस्कृत बीएचईएल कैम्पस,
हरिद्वार

11 **पुरुषोत्तम मिश्र**
टी.जी टी , सस्कृत राजकीय उच्चतर
माध्यमिक बाल विद्यालय, जहाँगीर पुरी,
दिल्ली

12 **निर्मल मिश्र**
टी जी टी , सस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय,
जेएनयू कैम्पस, दिल्ली

13. **रेखा झा**
टी जी टी , सस्कृत दिल्ली पुलिस पब्लिक
स्कूल, सफदरजग एन्कलेव, दिल्ली

14 **दया शंकर तिवारी**
प्रोजेक्ट फेलो, सस्कृत,
सामजिक विज्ञान एव मानविकी शिक्षा
विभाग, रा शै अ प्र.प नई दिल्ली

आमुख

अत्यन्त प्राचीन काल से संस्कृत भाषा महत्त्वपूर्ण भारतीय चिन्तनो का माध्यम रही है । वह भारतीय भाषाओं की जननी एव सम्पोषिका मानी जाती है । सस्कृत के शब्दो का आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास मे बहुत बड़ा योगदान है । सस्कृत के व्याकरण एव वाक्य-सरचना का प्रभाव भी आधुनिक भारतीय भाषाओ पर परिलक्षित है । आधुनिक भारतीय भाषाओं की आत्मा को पहचानने के लिए सस्कृत का ज्ञान उपादेय है ।

इस भाषा मे परस्पर सहयोग, सामञ्जस्य, त्याग, तपस्या, सत्य, अहिसा, राष्ट्रभक्ति एव विश्वबन्धुत्व के भावो की अपूर्व धारा प्रवाहित है । संस्कृत भाषा मे निहित प्रेरणाप्रद महान् आदर्शो का ज्ञान व्यक्तित्व को समुन्नत बनाता है । यह भाषा जनमानस की सयोजिका है। मानवीय गुणो को विकसित करने की इसमे अपूर्व क्षमता है । राष्ट्रीय अखण्डता तथा विश्वबन्धुत्व की भावना को प्रौढ करने के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है।

इस भाषा मे उत्तम कोटि के दर्शन एव साहित्य के अतिरिक्त भौतिक विज्ञान, रसायन-विज्ञान, खगोल-विज्ञान, चिकित्सा-विज्ञान, राजनीति-विज्ञान एवं वास्तु-विज्ञान जैसे आधुनिक वैज्ञानिक साहित्य के भी मौलिक ग्रन्थ उपलब्ध है ।

भाषा और साहित्य दोनों ही दृष्टियों से, संस्कृत के व्यापक महत्त्व को देखते हुए, आधुनिक भारतीय भाषाओं के शिक्षण मे सस्कृत की सहायता अपरिहार्य रूप से अपेक्षित है । इसीलिए कक्षा छ से आठ तक मातृभाषा हिंदी के साथ सयुक्त पाठ्यक्रम मे सस्कृत पढाने की व्यवस्था की गई है । इस क्रम मे राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद् ने **संस्कृत-धारा** नाम से कक्षा छ से आठ तक के लिए मातृभाषा के साथ पढाई जानेवाली सस्कृत का एक पाठ्यक्रम विकसित किया है । सस्कृत-धारा तीन भागो मे विभक्त होगी । प्रस्तुत पुस्तक इसी क्रम की पहली धारा है जो कक्षा छ के लिए तैयार की गई है । सरल भाषा मे मानवीय गुणो को विकसित करने वाले महत्त्वपूर्ण पाठो का सङ्ग्रह इस पुस्तक की विशेषता है ।

इसमें कुल दस पाठ है । सात पाठ गद्य और तीन पद्य के है । प्रथम पाठ **लोभः नाशस्य कारणम्** पञ्चतन्त्र के तृतीय तन्त्र काकोलूकीयम् से लिया गया है । लोभ कितना

हानिकर होता है और उसके कितने दु खद परिणाम होते है इस आशय को इस कथा मे प्रभावशाली ढंग से समझाया गया है ।

द्वितीय पाठ **संहति· कार्यसाधिका** हितोपदेश की एक कथा पर आधारित है । पारस्परिक सहयोग अत्यन्त दुष्कर कार्य को भी कितना सहज तथा सुकर बना देता है, यह इस पाठ की शिक्षा है।

तृतीय पाठ **सूक्तयः** उपयोगी एव आदर्श वाक्यो का सङ्ग्रह है । ये वाक्य विद्या, विनय, शूरता, प्रियवादिता आदि की प्रभावशालिनी शिक्षा देत है ।

चतुर्थ पाठ **दुग्धं दिव्यं रसायनम्** भारतीय चिकित्सा-विज्ञान के महान् ग्रन्थ चरक-सहिता के दुग्ध-वर्ग प्रकरण पर आधारित है । गाय का दूध और उससे बने हुए पदार्थ स्वास्थ्य के लिए कितने उपयोगी है, यह इस पाठ का शिक्षण-बिंदु है ।

पञ्चम पाठ **श्रीकृष्णस्य दूतकार्यम्** महाकवि भास के दूतवाक्यम् नामक एकाङ्की रूपक से लिया गया है । इस पाठ के वाक्य प्राचीन सस्कृत वाक्य रचना के नमूने है । कथोपकथन शैली की दृष्टि से यह पाठ बहुत महत्त्वपूर्ण है । दुर्योधन की कुटिलता तथा श्रीकृष्ण की सहिष्णुता एव गाम्भीर्य की इसमे अच्छी अभिव्यञ्जना है ।

षष्ठ पाठ **सुभाषितानि** विद्या, विनय आदि से सम्बद्ध प्रेरणादायक पद्यो का सङ्ग्रह है । इसमे कतिपय त्याज्य तथ्यो के प्रति भी सावधान रहने की प्रेरणा दी गई है ।

सप्तम पाठ **प्रजापतेः अनुशासनम्** बृहदारण्यकोपनिषद् से लिया गया है । इसमे देवता, मनुष्य एवं राक्षस तीनो को ब्रह्मा ने क्रमश· संयमी, दयालु और उदार बनने की शिक्षा दी है ।

अष्टम पाठ **लौहपुरुषः सरदार वल्लभभाई पटेलः** के जीवन पर आधारित है । देश-सेवा के इस महान् साधक का जीवन प्रेरणा का अक्षय स्रोत है ।

नवम पाठ **धन्या पुण्यमयी गङ्गा** है। इसमे गङ्गा के भौगोलिक महत्त्व तथा प्रवाह क्रम का वर्णन है।

दशम पाठ **बाल-गीतम्** सदाचार की भावना से ओतप्रोत एक सरस एवं स्फूर्तिदायिनी कविता है ।

प्रत्येक पाठ के साथ शब्दार्थ, व्याकरणात्मक टिप्पणी, अभ्यास तथा योग्यता-विस्तार शीर्षक से ऐसी सामग्री दी गई है जिससे पाठो को समझने तथा भाषा-विषयक ज्ञान को बढाने में समुचित सहायता मिल सके।

ज्ञान की एक स्वाभाविक भूख होती है । अध्यापक उस भूख को अपने स्वादिष्ट प्रवचन तथा आकर्षक अध्यापन-शैली से जगा सकते है । इस दृष्टि से अध्यापन के समय अधोलिखित बिन्दुओ पर ध्यान देना उपयोगी होगा —

1 सस्कृतवाङ्मय की विशालता के सुरुचिपूर्ण रीति से सङ्क्षेप मे परिचय द्वारा सस्कृत के महत्त्वपूर्ण साहित्य मे अभिरुचि उत्पन्न करनी चाहिए ।

2 सस्कृत व्याकरण और हिंदी व्याकरण के साम्य तथा वैषम्य पर भी थोडा प्रकाश डालना चाहिए ।

3 संस्कृत शब्दो के साथ हिंदी शब्दो की जो समानता है, उसे भी आलोकित करना चाहिए।

4 पाठो मे जो कारक तथा क्रियापद आए है, उन पर भी व्याकरण के अनुसार टिप्पणी करनी चाहिए ।

5 पाठो मे निहित राष्ट्रीय, सामाजिक एव सास्कृतिक महत्त्व के तत्त्वो पर विशद चर्चा की जानी चाहिए।

6. कक्षा छ मे निर्धारित व्याकरण के अश का उदाहरण पाठो से ही समझाना उचित होगा।

7. पद्य पाठो को पढाते समय श्लोको का सस्वर पाठ करना चाहिए और उसमे लघु, गुरु, यति एव विराम पर बहुत अधिक ध्यान देना चाहिए । उच्चारण की स्पष्टता और शुद्धता पर भी ध्यान देना चाहिए ।

अधोलिखित बिन्दुओ पर छात्र विशेषरूप से ध्यान दे -

1. जहॉ शब्दो को समझने मे कठिनाई हो उसे पाठ के अन्त मे दिए गए शब्दार्थ से समझ ले ।

2 प्रत्येक पाठ मे अभ्यास के प्रश्न दिए गए है । इन प्रश्नो के उत्तर के लिए पाठ को बार-बार पढे । इससे शुद्ध एव समुचित उत्तर देने मे सहायता मिलेगी ।

3 इस प्रकार सस्कृत पाठो को मनोयोग से पढने पर सस्कृत भाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा के प्रखर ज्ञान तथा उसके साहित्य मे प्रवेश की सुगमता भी प्राप्त होगी ।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51अ

मूल कर्त्तव्य--भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह--

(क) सविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, सस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय मे सँजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की सप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों मे समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओ का त्याग करे जो महिलाओ के सम्मान के विरुद्ध हो,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव है, रक्षा करे और उसका सवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक सपत्ति को सुरक्षित रखे और हिसा से दूर रहे, और

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियो के सभी क्षेत्रो मे उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयो को छू सके।

विषय-सूची

[illegible]

तुम्हे एक जन्तर देता हूं । जब भी तुम्हे सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा । क्या उससे उसे कुछ लाभ महुचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है ।





असतो मा सद्गमय।

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

मृत्योर्मा अमृतं गमय।

भावार्थ – हे ईश्वर ! मुझे कुमार्ग से सन्मार्ग की ओर ले जाएँ। अज्ञानरूपी अन्धकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर ले जाएँ। मृत्यु से अमरता की ओर ले जाएँ।

प्रथमः पाठः

[illegible]

[यह कथा पञ्चतन्त्र के तृतीय तन्त्र, काकोलूकीयम् से ली गई है। लोभ एव उसके दुःखद परिणाम का चित्रण इस पाठ मे है।

एक दरिद्र किसान एक साँप को देवता मानकर उसे प्रतिदिन दूध पिलाता है। साँप भी उसे प्रतिदिन सोने का एक सिक्का देता है। एक दिन किसान के बाहर जाने पर उसका पुत्र साँप को दूध देता है और उससे पूर्ववत् सिक्का प्राप्त करता है। किसान का पुत्र लोभवश सारी स्वर्णराशि एक साथ प्राप्त करने के लिए उस पर प्रहार करता है। साँप उसे डस लेता है जिससे वह मर जाता है।]

हरिदत्तः नाम एकः कृषकः। सः दरिद्रः किन्तु कृतज्ञः श्रद्धालुः च अस्ति। एकदा स्वक्षेत्रे भयङ्करं सर्प पश्यति। तं देवं मत्वा तस्मै दुग्धं पातुं यच्छति। सर्पः अपि कृषकाय एकां सुवर्णमुद्रां यच्छति। एवं प्रतिदिनं कृषकः सर्पाय दुग्धं यच्छति। सर्पः अपि कृषकाय प्रतिदिनम् एकैकां मुद्रां यच्छति। एकदा कृषकः कस्मैचित् कालाय ग्रामाद् बहिः गच्छति। तस्य पुत्रः सर्पाय दुग्धं यच्छति। सर्पः अपि कृषकपुत्राय स्वर्णमुद्रां पूर्ववत् यच्छति।

कृषकपुत्रः चिन्तयति-सर्पस्य पार्श्वे विशालः स्वर्णराशिः अस्ति। कथं न एनं हत्वा सम्पूर्ण हस्तगतं करोमि ? एवं विचार्य अग्रिमे दिने पात्रं दुग्धेन पूरयित्वा सर्पस्य प्रतीक्षां करोति। सर्पः दुग्धं पातुम् आगच्छति। कृषकपुत्रः तं लगुडेन प्रहरति।





सर्पः अपि तं क्रोधेन दशति। कृषकपुत्रः विषप्रभावात् सद्यः मृतः भवति।

प्रवासात् कृषकः प्रत्यागच्छति। स्वपुत्रं मृतं दृष्ट्वा चिन्तयति लोभः एव अस्य मरणस्य कारणम्। सत्यम् एतत्–लोभः नाशस्य कारणम्। तस्मात् —

अतिलोभो न कर्त्तव्यो लब्धं नैव परित्यजेत्।
अतिलोभाभिभूतस्य नाशो भवति निश्चितम्।।

शब्दार्थाः

कृषकः	—	किसान
कृतज्ञः	—	उपकार मानने वाला
एकदा	—	एक बार
पश्यति	—	देखता है
श्रद्धालुः	—	श्रद्धा रखने वाला
तम्	—	उसको
मत्वा	—	मानकर
तस्मै	—	उसके लिए (उसको)
पातुम्	—	पीने के लिए

यच्छति	—	देता है
स्वक्षेत्रे	—	अपने खेत मे
बहिः	—	बाहर
सर्पाय	—	सर्प के लिए
अपि	—	भी
कस्मैचित् कालाय	—	कुछ समय के लिए
चिन्तयति	—	सोचता है
पार्श्वे	—	पास मे
एनम्	—	इसको
कथम्	—	क्यो
करोमि	—	करता हूँ
एवम्	—	ऐसे
विचार्य	—	विचार कर
अग्रिमे	—	अगले
पात्रे	—	बर्तन मे
पूरयित्वा	—	भरकर
करोति	—	करता है
लगुडेन	—	लाठी से
प्रहरति	—	प्रहार करता है
क्रोधेन	—	क्रोध से
दशति	—	डसता है
सद्यः	—	तुरन्त
प्रत्यागच्छति	—	लौटता है
दृष्ट्वा	—	देखकर
अस्य	—	इसका
अपितु	—	बल्कि
एतत्	—	यह
तस्मात्	—	इसलिए
लब्धम्	—	प्राप्त
न परित्यजेत्	—	त्याग नही करना चाहिए
अतिलोभाभिभूतस्य	—	अत्यधिक लालच से ग्रस्त मनुष्य का
निश्चितम्	—	अवश्य ही
भवति	—	होता है



क. सस्कृत मे लिङ्ग एवं वचन –

इस पाठ मे आपने हरिदत्त, कृषक·, पुत्र, सर्प आदि शब्दो को पढा है। ये शब्द व्याकरण की दृष्टि से पुल्लिङ्ग कहलाते है। सस्कृत मे लिङ्ग तीन होते है – पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुसकलिङ्ग परन्तु संस्कृत के क्रियापदो मे हिदी की तरह लिङ्ग परिवर्तन नही होता है। उदाहरण –

हरिदत्त· गच्छति	—	हरिदत्त जाता है।
रमा गच्छति	—	रमा जाती है।
वाहन गच्छति	—	वाहन जाता है।

ख. सस्कृत मे तीन वचन होते है – एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। इसके उदाहरण नीचे लिखे है –

कृषक	—	एक कृषक
कृषकौ	—	दो कृषक
कृषका	—	दो से अधिक

ध्यान दीजिए हिदी में दो ही वचन होते है – एकवचन और बहुवचन – सस्कृत मे द्विवचन भी होता है।

ग. अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दो के रूप बालकवत् चलते है, जैसे –

विभक्तियॉ	*एकवचन*	*द्विवचन*	*बहुवचन*
प्रथमा	बालक·	बालकौ	बालका·
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकै
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयो·	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयो·	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक !	हे बालकौ !	हे बालका· !

1. **निम्नलिखित प्रश्नो का दिए गए उत्तरों से मिलान कीजिए**

प्रश्न	**उत्तर**
क. कृषकस्य नाम किम् ?	प्रवासात् कृषकः प्रत्यागच्छति।
ख. कृषक कीदृशं सर्प पश्यति ?	सर्प· कृषकाय सुवर्णमुद्रां यच्छति।
ग. सर्प कृषकाय कि यच्छति ?	कृषक भयङ्कर सर्प पश्यति।
घ. कृषकपुत्र कि चिन्तयति ?	कृषकस्य नाम हरिदत्त अस्ति।
ङ. प्रवासात् क· प्रत्यागच्छति ?	कृषकपुत्र· चिन्तयति-सर्पस्य पार्श्वे विशालस्वर्णराशि· अस्ति।

2. **रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए**

क. हरिदत्त · · · अस्ति।

ख. सर्पस्य पार्श्वे ····· · ······· ·· अस्ति।

ग. सर्प दुग्धम् ·················· आगच्छति।

घ. कृषकपुत्र ·················· मृत· भवति।

3 **पाठ से उपयुक्त विशेषण शब्द चुनकर निम्नलिखित रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए**

विशेषण	**विशेष्य**
क ··················	सर्पम्
ख ··················	दुग्धम्
ग ··················	सुवर्णमुद्राम्
घ ··················	स्वर्णराशिः
ङ ············· ·	हस्तगतम्

4. **बालक की मृत्यु का कारण लोभ कैसे बना ? इस विषय पर हिंदी मे अपने विचार प्रकट कीजिए**

5. **अधोलिखित शब्दों के स्थान पर संस्कृत शब्द लिखिए**

यथा – अपने खेत मे स्वक्षेत्रे

किसान के लिए	···· ·············	पीने के लिए	··················
क्रोध से	··················	मारकर	··················

इसके	....	देखकर	....
नाश का	... .	तुरन्त	. .. .

[illegible]

क. धातुओं के तीनो वचनो में (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन) में निम्नलिखित रूप देखिए

गम्	(गच्छ)	गच्छति (जाता है)	गच्छत	गच्छन्ति
दृश्	(पश्य)	पश्यति (देखता है)	पश्यत	पश्यन्ति
चिन्त्		चिन्तयति (सोचता है)	चिन्तयत	चिन्तयन्ति
ह्र		प्रहरति (प्रहार करता है)	प्रहरत.	प्रहरन्ति
दश्		दशति (करता है)	दशत	दशन्ति

ख. अधोलिखित शब्दो को पढ़िए

दृष्ट्वा	–	देखकर
हत्वा	–	मारकर
पूरयित्वा	–	भरकर

उपर्युक्त शब्दो मे ***त्वा*** प्रत्यय का प्रयोग है जिसका अर्थ है ***करके***

ग. लोभविषयक अधोलिखित सूक्तियों को कण्ठस्थ कीजिए

i	लालच बुरी बला है।	लोभो मूलम् अनर्थानाम्।
ii	लोभ पाप का कारण है।	लोभ पापस्य कारणम्।
iii	अत्यधिक लालच नही करना चाहिए।	अतिलोभ. न कर्तव्य ।
iv	लोभ के कारण जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, वे दु ख पाते है।	क्लिश्यन्ते लोभमोहिता ।
v	लोभ को छोड कर मनुष्य सुखी होवे।	लोभ हित्वा सुखी भवेत्।
vi	लोभ कभी न समाप्त होने वाली बीमारी है।	लोभः व्याधिरनन्तक.।

द्वितीयः पाठः

[illegible]

[प्रस्तुत पाठ की कथा हितोपदेश ग्रन्थ पर आधारित है। इस ग्रन्थ मे बहुत रोचक कहानियॉ है जिनको पढकर बालक मनोरञ्जन के साथ अच्छे सस्कार पाता है।

सुदर्शन नाम का राजा विष्णुशर्मा नाम के विद्वान् को अपने मूर्ख राजकुमारो को अल्पसमय मे शुभसस्कार एव नीति की शिक्षा देने के लिए नियुक्त करता है। विष्णुशर्मा पशु-पक्षियो की कहानियो के द्वारा राजकुमारो को सुसंस्कृत एव नीतिनिपुण बनाता है।

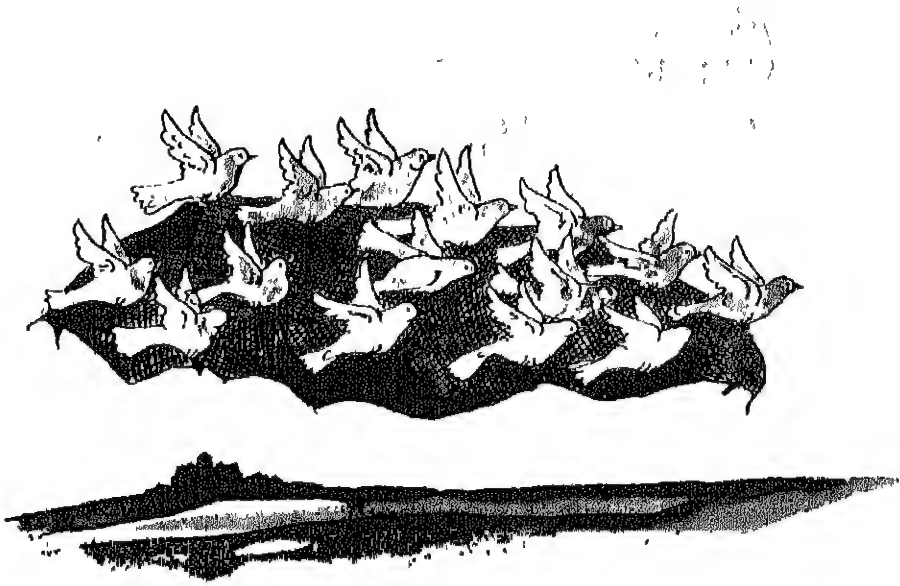
प्रस्तुत पाठ की कहानी इस प्रकार है — एक शिकारी जगल मे जाल बिछाता है। कबूतरो का एक समूह उसमे फस जाता है। अपने राजा के कहने पर सभी कबूतर एक साथ जाल को लेकर उड़ते है। वे चूहो के राजा के पास जाकर उससे जाल का बन्धन कटवाते है। सड्गठन और एकता से सभी कार्य सिद्ध हो जाते है यही इस कहानी का निष्कर्ष है।]

अस्ति एकं निर्जनं वनम्। एकदा कश्चित् व्याधः वनम् आगच्छति। सः तण्डुलकणान् भूतले विकिरति। तत्र सः जालं प्रसारयति। स्वयं दूरं गत्वा प्रच्छन्नः तिष्ठति।

चित्रग्रीवः नाम कपोतराजः कपोतैः सह आकाशे उत्पतति। कपोताः भूमौ तण्डुलकणान् पश्यन्ति। ते तण्डुलकणान् अभिलषन्ति।

चित्रग्रीवः वदति-अत्र निर्जने वने कुतः तण्डुलकणाः ? किंचित् अनिष्टं पश्यामि अहम्।

एकः कपोतः वदति-किम् अनिष्टम् अत्र ? यदि सर्वत्र शङ्कां करिष्यामः तर्हि अस्माकं जीवनम् अपि कठिनं भविष्यति। अतः वयं भूमौ अवतरामः।



सर्वे कपोताः तण्डुलार्थं गगनात् अवतरन्ति। ततः जाले बद्धाः ते दुःखिताः भवन्ति।

चित्रग्रीवः वदति-न भेतव्यम्। वयम् उपायं चिन्तयामः। वयं समकालम् एव जालेन सह उत्पतामः।

कपोताः जालेन सह गगनम् उत्पतन्ति। चकितः व्याधः दूरात् तद् दृश्यं पश्यति। खिन्नः सः गृहं गच्छति।

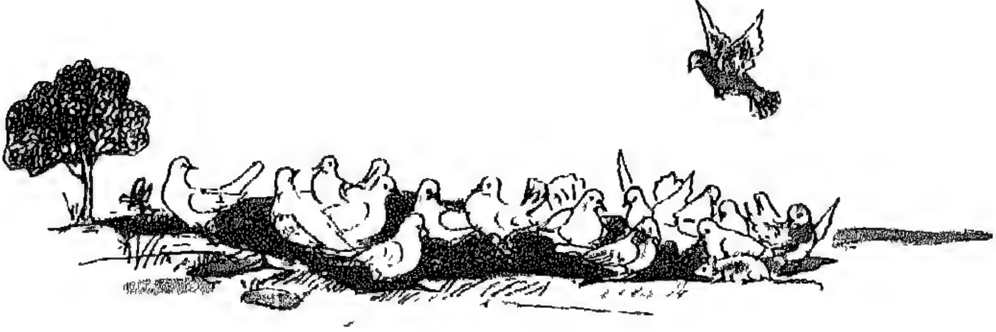
चित्रग्रीवः पुनः वदति–चित्रवने हिरण्यकः नाम मूषकराजः निवसति। वयं तस्य समीपं गच्छामः। सः अस्माकं पाशानां छेदनं करिष्यति।

सर्वे कपोताः हिरण्यकस्य बिलस्य समीपम् आगच्छन्ति। हिरण्यकः स्वमित्रं दृष्ट्वा प्रसन्नः भवति किन्तु तस्य बन्धनं दृष्ट्वा दुःखी भवति। सः शीघ्रं स्वमित्रस्य बन्धनस्य छेदनाय तत्परः भवति।

चित्रग्रीवः हिरण्यकं निवारयति वदति च–भोः वयस्य, प्रथमं मम आश्रितानां पाशानां छेदनं कुरु, अनन्तरं मम।

चित्रग्रीवस्य प्रजावात्सल्येन प्रसन्नः हिरण्यकः कपोतानां पाशान् कर्तयति। सर्वे कपोताः मुक्ताः भवन्ति। ततः चित्रग्रीवः अपि मुक्तः भवति।

सत्यम् एतत्—संहतिः कार्यसाधिका !



निर्जनम्	—	जहाँ कोई मनुष्य न हो
व्याध	—	बहेलिया
भूमौ	—	पृथ्वी पर
तण्डुलकणान्	—	चावल के दानो को
भूतले	—	पृथ्वी पर
विकिरति	—	बिखेरता है
तत्र	—	वहाँ
प्रसारयति	—	फैलाता है
गत्वा	—	जाकर
प्रच्छन्नः	—	छिपा हुआ
तिष्ठति	—	खडा रहता है
कपोतराजः	—	कबूतरो का राजा
सह	—	साथ
उत्पतति	—	उडता है

कुतः	—	कहाॅ से, कैसे
अत्र	—	यहाॅ
किचित्	—	कुछ
करिष्यामः	—	करेगे
तर्हि	—	तो
अवतरामः	—	उतरते हैं
न भेतव्यम्	—	डरो मत
चिन्तयामः	—	सोचते है
सभकालम्	—	एक ही समय पर , एक साथ
चकितः	—	हैरान
खिन्नः	—	दु खी
पुनः	—	फिर से
तस्याः	—	उसके
मूषकराजः	—	चूहो का राजा
निवसति	—	निवास करता है
मम	—	मेरा
समीपम्	—	पास मे
पाशानाम्	—	बन्धनो का
छेदनम्	—	काटना, कर्त्तन
बिलस्य	—	बिल के
स्ववयस्यम्	—	अपने मित्र को
शीघ्रम्	—	झट से
निवारयति	—	रोकता है , मना करता है
प्रजावात्सल्येन	—	प्रजा के प्रति स्नेह से
कर्तयति	—	काटता है
संहतिः	—	सड्गठन, एकता



क. प्रथम पाठ मे आपने लट्लकार के प्रथम पुरुष के रूपो को पढा है। प्रस्तुत पाठ मे लट्लकार के प्रथम पुरुष एकवचन एवं बहुवचन के रूपो को छांट कर उनकी सूची तैयार कीजिए। इस पाठ मे लट्लकार के उत्तम पुरुष के निम्नलिखित रूपो का समावेश है —

उत्तम पुरुष एकवचन —	पश्यामि	चिन्तयामि	उत्पतामि	गच्छामि
उत्तम पुरुष बहुवचन —	पश्याम·	चिन्तयाम·	उत्पताम·	गच्छाम·

वदति क्रियापद के तीनो पुरुषो एव तीनो वचनों के रूप नीचे दिए गए है —

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वदति	वदत	वदन्ति
मध्यम पुरुष	वदसि	वदथ·	वदथ
उत्तम पुरुष	वदामि	वदाव·	वदाम·

ख प्रस्तुत पाठ मे निम्नलिखित सर्वनामो का प्रयोग हुआ है — स , ते, अहम्, वयम्। हिंदी की तरह सस्कृत मे सर्वनाम के तीन पुरुष होते है — प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष। प्रथम पुरुष मे कई सर्वनाम होते है। लिङ्ग के अनुसार उनके रूपो मे परिवर्तन होता है। नीचे केवल तद् सर्वनाम के तीनो लिङ्गो के प्रथमा विभक्ति कर्त्ता कारक के रूप दिए गए हैं। सस्कृत भाषा मे उत्तम एव मध्यम पुरुष के सर्वनाम नीचे दिए गए है। तीनो लिङ्गो मे उनके रूप एक समान रहते है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	अहम्	आवाम्	वयम्
मध्यम पुरुष	त्वम्	युवाम्	यूयम्

निम्नलिखित शब्दो के रूपों मे कोई भी परिवर्तन नहीं होता है। इसलिए इन्हें अव्यय कहते हैं।

एकदा, तत्र, सह, अत्र, कुतः, सर्वत्र, यदि, तर्हि, अपि, अत , एव, दूरत , पुन·, शीघ्रम्, न, किन्तु, भोः।

अभ्यासः

1 **संस्कृत में उत्तर लिखिए**

क व्याध. तण्डुलकणान् कुत्र विकिरति ?

ख व्याध. किं प्रसारयति ?

ग कपोतराज कै. सह उत्पतति ?

घ कपोता किमर्थं गगनाद् अवतरन्ति ?

ङ हिरण्यक केषां पाशान् कर्तयति ?

2. क. **पाठ के आधार पर समानार्थक शब्द लिखिए**

भूमौ, मित्रम्, आकाशः, छेदनम् ।

ख. **पाठ के आधार पर विलोम शब्द लिखिए**

प्रसन्न , मुक्त·, गच्छति, दूरम्, उत्पतन्ति।

3. **कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उचित रूप से रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए**

क व्याध ·· भूतले विकिरति। (तण्डुलकण)

ख चित्रग्रीव ···································· उत्पतति। (आकाश)

ग कपोता· ·································· अवतरन्ति। (गगन)

घ कपोता ···························· सह गगने उत्पतन्ति। (जाल)

4. **निम्नलिखित अव्ययो को दिए गए पाठ मे रेखाङ्कित कीजिए और इनके अर्थ लिखिए**

एकदा, तत्र, सह, अत्र, कुत·, सर्वत्र, यदि–तर्हि, अपि, अध , एव, दूरत , पुन , शीघ्रम्, न, किन्तु, भो

5. **उदाहरण के अनुसार तालिका पूर्ण कीजिए**

उदाहरण —

आकाशः, आकाशम्, आकाशेन, आकाशाय, आकाशात्, आकाशस्य, आकाशे

कपोत	—	—	—	—	—	—
परिवार	—	—	—	—	—	—
उपाय·	—	—	—	—	—	—
पाश·	—	—	—	—	—	—
मूषक·	—	—	—	—	—	—

योग्यता विस्तार

क. सह के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है, जैसे —

कपोतेन सह	कबूतर के साथ
मित्रेण सह	मित्र के साथ
जालेन सह	जाल के साथ

ख.

तस्य	उसका/के/की
हिरण्यकस्य	*हिरण्यक का/के/की*
बिलस्य	बिल का/के/की
मित्रस्य	मित्र का/के/की
बन्धनस्य	बन्धन का /के/की
चित्रग्रीवस्य	चित्रगीव का/के/की

उपर्युक्त शब्दो मे षष्ठी विभक्ति एक वचन का प्रयोग किया गया है।

ग. सहति का अर्थ है एकता इसी से सम्बद्ध अन्य सूक्तियाँ कण्ठस्थ कीजिए

i	एकता मे बड़ी शक्ति है।	**सघे शक्तिः कलौ युगे।**
ii	ससार में ऐसा कौन सा कार्य है जो पॉच लोगो के मिल जाने पर सिद्ध न हो जाए।	**पञ्चभिर्मिलितैः कि यज्जगतीह न साध्यते।**
iii	बहुत-सी तुच्छ वस्तुओ के समूह को भी जीतना कठिन होता है।	**बहूनामप्यसाराणां समवायो हि दुर्जयः।**

तृतीयः पाठः

सूक्तयः

समय-समय पर महापुरुषो ने अपने जीवन मे प्राप्त जिन बहुमूल्य अनुभवो को मानव-समाज को सार रूप मे दिया है, वे ही सूक्तियाँ कही जाती है। प्रस्तुत पाठ मे ऐसी ही कुछ शिक्षाप्रद सूक्तियो का सङ्कलन है।

1. विद्या ददाति विनयम्।
2. आचारः परमो धर्मः।
3. ज्ञानं भारः क्रियां विना।
4. वीरभोग्या वसुन्धरा।
5. लोभः पापस्य कारणम्।
6. कः परः प्रियवादिनाम्।
7. बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।
8. सत्यं वद।
9. वसुधैव कुटुम्बकम्।
10. कीर्तिर्यस्य स जीवति।
11. का हानिः? समयच्युतिः।

शब्दार्थाः

ददाति — देता है
विनयम् — नम्रता
आचार — आचरण

क्रियां विना	—	आचरण के बिना, आचरण के अभाव मे
भारः	—	बोझ, निष्फल, बेकार, व्यर्थ
वीरभोग्या	—	वीरो द्वारा भोगने योग्य
वसुन्धरा	—	पृथ्वी
कः	—	कौन
प्रियवादिनाम्	—	प्रिय बोलने वालो का
यस्य	—	जिसका
कुटुम्बकम्	—	परिवार
कीर्तिः	—	यश
समयच्युतिः	—	समय की हानि, समय खोना

व्याकरणात्मक टिप्पणी

पहले पाठ मे आपने जान लिया है कि सरकृत मे पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुसकलिङ्ग तीन प्रकार के शब्द होते है। इस पाठ मे पापम्, कारणम्, बलम्, कुटुम्बकम्, सत्यम्, ज्ञानम् आदि शब्द नपुसकलिङ्ग के हैं। यह भी ध्यान रखिए कि पुल्लिङ्ग तथा नपुसकलिङ्ग शब्दो के रूपो का केवल प्रथमा और द्वितीया विभक्ति मे ही अन्तर होता है। शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिङ्ग के अनुसार चलेगे।

उदाहरण — ज्ञान शब्द के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ज्ञानं	ज्ञाने	ज्ञानानि
द्वितीया	ज्ञान	ज्ञाने	ज्ञानानि
तृतीया	ज्ञानेन	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानैः
चतुर्थी	ज्ञानाय	,,	ज्ञानेभ्य
पञ्चमी	ज्ञानात्	,,	,,
षष्ठी	ज्ञानस्य	ज्ञानयो	ज्ञानानाम्
सप्तमी	ज्ञाने	,,	ज्ञानेषु

इसी प्रकार ऊपर बताए गए शब्दो के रूप भी लिखिए।

अभ्यास :

1 क्रिया के बिना ज्ञान भारस्वरूप है। इस भाव का अपने शब्दो मे विस्तार कीजिए

2 संस्कृत मे उत्तर लिखिए
- क विद्या किं ददाति ?
- ख लोभ कस्य कारणम् ?
- ग क जीवति ?
- घ क्रिया विना किं भार अस्ति ?
- ङ का हानि ?

3. निम्नलिखित शब्दो के स्थान पर संस्कृत शब्द लिखिए

नम्रता, समय की हानि, पृथ्वी, पराया यश।

4. अधोलिखित वाक्यो के सामने सम्बद्ध सूक्ति लिखिए
- i लोभ पाप का कारण है। ______________
- ii मीठा बोलने के लिए पराया कौन है? ______________
- iii सत्य बोलो। ______________
- iv पृथ्वी ही परिवार है। ______________
- v आचरण के बिना ज्ञान बोझ है। ______________

योग्यता विस्तार

राष्ट्रीय आदर्शवाक्यानि

1	भारत सरकार	सत्यमेव जयते।
2	लोकसभा	धर्मचक्रप्रवर्तनाय।
3	सर्वोच्चन्यायालय	यतो धर्मस्ततो जय।
4	आकाशवाणी	बहुजनहिताय।
5	दूरदर्शन	सत्यं शिवं सुन्दरम्।
6	स्थलसेना	सेवा अस्माकं धर्मः।

7	वायुसेना	नभःस्पृशं दीप्तम्।
8	नौ सेना	शं नो वरुणः।
9	राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्	गुरुर्गुरुतमं धाम।
10	केद्रीय विद्यालय सगठन	तत्त्वं पूषन्नपावृणु।
11.	केद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड	असतो मा सद्गमय।
12	डाक तार विभाग	अहर्निशं सेवामहे।
13	श्रम मत्रालय	श्रम एव जयते।
14	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद्	विद्यया ऽमृतमश्नुते।

चतुर्थः पाठः



[धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्य मूलमुत्तमम्—स्वास्थ्य ही धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का उत्तम मूल है। स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए हितकर पदार्थो का सूक्ष्म विवेचन आयुर्वेद मे किया गया है। चरक मुनि द्वारा प्रतिपादित चरकसहिता को आयुर्वेद का महान् विश्वकोष माना जाता है। प्रस्तुत पाठ इसी चरकसंहिता के **सूत्रस्थान** खण्ड के अन्नपानविधि नामक अध्याय के दुग्धवर्ग से लिया गया है। इस पाठ मे दुग्ध तथा इससे बने दधि, तक्र, नवनीत तथा घृत के गुणो का सुन्दर वर्णन किया गया है।]

गोदुग्ध बुद्धिवर्धकं पौष्टिकं रोगहरं शीतं मधुरं रसायनम्। इदं तृषं शमयति क्षुधं च वर्धयति।

दधि सर्वथा लाभप्रदम्। इदं कृशताम् अपहरति। दधि नक्तं न भुञ्जीत। दिने अपि घृतेन, मधुना, शर्करया, मुद्गसूपेन आमलकेन वा संयुक्तम् इदम् अनेकान् रोगान् हरति।

तक्रं उदररोगान् दूरीकरोति। पाण्डुरोगे च इदं विशेषेण हितकरम्। नवनीतं बुभुक्षां वर्धयति। अरुचिं नाशयति। हृदयं सबलं करोति।

घृतं स्मृतिं बुद्धिं शक्तिं च पोषयति, वातं पित्तं जीर्णज्वरं च नाशयति। विधिपूर्वकं प्रयुक्तं घृतं सहस्रगुणितं लाभकरं भवति।

मात्रानुसारं भोजनं कर्तव्यम्। अतिमात्रं गृहीतम् अमृतम् अपि विषं भवति।

शब्दार्थाः

रसायनम्	—	जीवन शक्तिवर्धक औषधि
तृषम्	—	प्यास को
शमयति	—	शान्त करता है
क्षुधम्	—	भूख को
वर्धयति	—	बढाता है
दधि	—	दही
कृशताम्	—	दुर्बलता को
हरति	—	दूर करता है
नक्तम्	—	रात्रि मे
न भुञ्जीत	—	नही खाना चाहिए
घृतेन	—	घी के साथ
मधुना	—	शहद के साथ
शर्करया	—	शक्कर के साथ
मुद्गसूपेन	—	मूग की दाल के साथ
आमलकेन	—	ऑवले के साथ
तक्रम्	—	छाछ
पाण्डुरोगे	—	पीलिया रोग मे
नवनीतम्	—	मक्खन
बुभुक्षां	—	भूख को
अरुचिम्	—	रुचि के अभाव को
पोषयति	—	पुष्ट करता है
वातम्	—	वायु को
पित्तम्	—	पित्त को
जीर्णज्वरम्	—	पुराने बुखार को
सहस्रगुणितम्	—	हजार गुणा अधिक मात्रा में
मात्रानुसारं	—	मात्रा के अनुसार

व्याकरणात्मक टिप्पणी

1. दुग्धम्, घृतम्, तक्रम्, नवनीतम्, सभी शब्द नपुसकलिङ्ग हैं और इनके रूप तृतीय पाठ मे दिए गए 'ज्ञान' के समान चलते है।
2. निम्नलिखित शब्दो को देखिए—
   रोगहरम् — रोग हरने वाला
   लाभप्रदम् — लाभ देने वाला
   हितकरम् — लाभकारी
   लाभकरम् — लाभदायक
   इसी प्रकार के और शब्द अपनी हिदी की पुस्तक मे भी खोजिए और एक सूची बनाइए।
3. निम्नलिखित क्रियाओ को देखिए और स्मरण कीजिए —

वर्धयति	—	बढाता है	वर्धते	—	बढता है
शमयति	—	शान्त करता है	शाम्यति	—	शान्त होता है
नाशयति	—	नष्ट करता है	नश्यति	—	नष्ट होता है
पोषयति	—	पुष्ट करता है	पुष्यति	—	पुष्ट होता है

अभ्यास :

1. **संस्कृत मे उत्तर लिखिए**
   क. गोदुग्ध का शमयति ?
   ख. नक्त कि न भुञ्जीत?
   ग. पाण्डुरोगे कि विशेषेण हितकरम् ?
   घ. कि हृदय सबल करोति ?
   ङ. घृत क नाशयति?
2. **रिक्त स्थानो की पूर्त्ति कीजिए**
   क. दधि ········ ····· ··· संयुक्तं रोगान् हरति।
   ख तक्रम् ··· ············· दूरीकरोति।

ग. नवनीतम् ……………… वर्धयति।

घ घृतम् ·· ·· ·· ····· ·· पोषयति।

ङ. दुग्धम् ………… ··· · रसायन।

3. **निर्दिष्ट शब्द को रेखांकित कीजिए**

क.	घृतेन, सूपेन, आमलकेन, रोगान्	(जो शब्द तृतीया विभक्ति मे नही हैं)
ख.	अपि, च, वा, इदम्, न	(जो शब्द अव्यय नही है)
ग.	दुग्धम्, मधुरम्, घृतम्, दधि	(जो शब्द वस्तुवाचक नही हैं)
घ.	अपहरति, करोति, हरति, स्मृति	(जो शब्द क्रियापद नही है)

4 **निम्नलिखित शब्दो के विपरीतार्थक शब्द पाठ से चुनकर लिखिए**

रुचिम् ________	नक्तम् ________	हानिकरम् ________
पोषयति ________	शमयति ________	विधिरहितम् ________
अमृतम् ________	निर्बलम् ________	

योग्यता विस्तार

चरकसहिता से ही कुछ अनमोल वचन —

1 **कार्श्यार्थं स्थूलदेहानामनुशस्तं मधूदकम्** — मोटापा कम करने के लिए पानी मे शहद डालकर पीना चाहिए।

2. **आर्द्रकं विश्वभेषजम्** — अदरक पूर्ण औषधि है।

3 **जम्बीरः कफवातघ्नः कृमिघ्नो भुक्तपाचनः** — नीबू कफ और वात को नष्ट करता है। कीडो को मारता है और खाए हुए को पचाता है।

4 **ग्राही गृञ्जनकस्तीक्ष्णो वातश्लेष्मार्शसां हित.** — गाजर अत्यधिक वात, कफ और बवासीर से पीडित लोगो के लिए लाभदायक है।

5 **खर्जूरं च रक्तक्षयापहम्** — खजूर रक्त की कमी को दूर करता है।

(1-5) सूत्रस्थान अध्याय -27

6 **घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व** — घी से तुम शरीर को पुष्ट करो।

यजु. 12.44)

पञ्चमः पाठः

श्रीकृष्णस्य दूतकार्यम्



प्रस्तुत वृत्तान्त दूतवाक्यम् से लिया गया है। दूतवाक्यम् महाकवि भास का एकाङ्की रूपक (नाटक) है। इसमे कञ्चुकी, दुर्योधन और श्रीकृष्ण जी के सम्वाद अङ्कित हैं। कञ्चुकी आकर राजा दुर्योधन को सूचित करता है कि पाण्डवो का दूत बनकर पुरुषोत्तम आए है। दुर्योधन चेतावनी देता है कि श्रीकृष्ण के सम्मान मे कोई सभा मे खडा नही होगा।

श्रीकृष्ण जी का प्रवेश होता है। उनके व्यक्तित्व के प्रभाव से सभी लोग खड़े हो जाते है। दुर्योधन उठना नही चाहता किन्तु उसे घबराहट होती है। वह कॉपता हुआ आसन से गिरने लगता है। किसी तरह सम्भलता हुआ श्रीकृष्ण को आसन पर बैठने के लिए कहता है और पाण्डवो की स्थिति पूछता है।

श्रीकृष्ण जी ने पाण्डवों का हिस्सा देने के लिए कहा परन्तु दुर्योधन ने पाण्डवों को युद्ध के लिए ललकारा। श्रीकृष्ण जी ने समझाया कि मित्रों और बन्धुओं को वञ्चित करके राज्य प्राप्त करने वालों का श्रम व्यर्थ हो जाता है।

काञ्चुकीयः — जयतु महाराजः ! पाण्डवानां दूतः पुरुषोत्तमः आगतः।

दुर्योधनः — अधम ! सः गोचारकः पुरुषोत्तमः?

काञ्चुकीयः — प्रसीदतु महाराजः ! केशवः आगतः !

दुर्योधनः — उचितम् उक्तम् । प्रवेशय दूतं, घोषय च सभायाम् — 'केशवस्य सम्माने यः उत्थास्यति सः दण्ड्यः भविष्यति।'

काञ्चुकीयः — यथा आज्ञापयति महाराजः !

दुर्योधनः — (आत्मगतम्) अहो महिमा केशवस्य। इमम् आगच्छन्तं दृष्ट्वा बलात् उत्थातुं विवशः भवामि। आदेशस्य विपरीतम् अन्ये अपि राजानः सम्भ्रमेण उत्तिष्ठन्ति। अरे ! अरे ! अहं तु आसनात् कम्पमानः पतामि। (प्रकाशम्) धर्मपुत्रादीनां का स्थितिः?

वासुदेवः — गान्धारीपुत्र ! पाण्डवाः भवतः कुशलं पृच्छन्ति, निवेदयन्ति च 'वनवासस्य अज्ञातवासस्य च समयः समाप्तः। सम्प्रति अस्माकं दायं प्रयच्छतु भवान्।'

दुर्योधनः — कथं ते दायं याचन्ते। न ते दायादाः। ते तु देवपुत्राः।

वासुदेवः — द्वेषं त्यक्त्वा तथा करोतु भवान् प्रणयेन यथा पाण्डवाः वदन्ति ।

दुर्योधनः — भो दूत ! यदि ते राज्यम् इच्छन्ति, तर्हि संग्रामं कुर्वन्तु, अथवा शान्तये तपोवनं प्रविशन्तु।

वासुदेवः — भो सुयोधन ! धर्मेण प्राप्तं राज्यं कल्याणाय भवति। यः मित्राणि बन्धून् च वञ्चयित्वा राज्यं प्राप्तुम् इच्छति, तस्य श्रमः विफलः भवति।

शब्दार्थाः

वासुदेव	—	वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्ण
गोचारकः	—	ग्वाला
प्रसीदतु	—	प्रसन्न हो
घोषय	—	घोषणा कर दो
उत्थास्यति	—	उठेगा
दण्ड्यः	—	दण्ड के योग्य
आत्मगतम्	—	मन मे
आगच्छन्तम्	—	आते हुए को
बलात्	—	बलपूर्वक
उत्थातुम्	—	उठने के लिए
सम्भ्रमेण	—	घबराहट के कारण
प्रकाशम्	—	प्रकट
धर्मपुत्रादीनाम्	—	यम, वायु, इन्द्र तथा अश्विनीकुमारो के पुत्र (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन तथा नकुल-सहदेव)
निवेदयन्ति	—	निवेदन करते है
सम्प्रति	—	अब, इस समय
प्रयच्छतु	—	दे दीजिए
दायम्	—	भाग, हिस्सा
दायादाः	—	हिस्सेदार
प्रणयेन	—	प्रेम से
भुज्यते	—	भोगा जाता है
शान्तये	—	शान्ति के लिए
कल्याणाय	—	कल्याण के लिए
वञ्चयित्वा	—	ठग कर
प्राप्तुम् इच्छति	—	पाना चाहता है
श्रमः	—	परिश्रम
विफलः	—	व्यर्थ

अभ्यास:

1. संस्कृत मे उत्तर लिखिए

क. वासुदेव कस्य पुत्र आसीत् ?

ख. क दुर्योधनसभायां दूतरूपेण आगत ?

ग. केन प्राप्त राज्य कल्याणाय भवति ?

घ. सम्भ्रमेण के उत्तिष्ठन्ति ?

2. रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए

क पाण्डवाना दूतः .... आगत.।

ख केशवस्य सम्माने .... उत्थास्यति .... दण्ड्य भविष्यति।।

ग कथ ते .... याचन्ते।

घ द्वेषं त्यक्त्वा प्रणयेन .... करोतु भवान् . . .... पाण्डवा वदन्ति।

3. लिखिए — यह कौन किसे कह रहा है ?

	कथन	कौन	किसको
यथा	i जयतु महाराज	काञ्चुकीय.	दुर्योधनम्
	ii प्रवेशय दूतम्	______	______
	iii पाण्डवा भवत. कुशलं पृच्छन्ति	______	______
	iv न ते दायादा, ते तु देवपुत्रा	______	______

4. पाठ में प्रयुक्त अव्यय पदो को रेखाङ्कित कीजिए

5. अधोलिखित के स्थान पर संस्कृत शब्द लिखिए

जो उठेगा, वे मागते है, जैसा कहते हैं, तपोवन मे प्रवेश करे, प्राप्त करना चाहता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

क. **पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित क्रियाओं को देखिए**

जयतु (उसकी) जय हो।

प्रसीदतु (वह) प्रसन्न हो।

प्रयच्छतु (वह) दे।
करोतु (वह) करे।
कुर्वन्तु(वे सब) करे।
प्रविशन्तु (वे सब) प्रवेश करे।

ध्यान दीजिए ऊपर दी गई सभी क्रियाएँ आज्ञा अर्थ को बता रही है। सस्कृत मे आज्ञा अर्थ के लिए लोट् लकार का प्रयोग होता है। 'जयतु' क्रियापद के तीनो पुरुषो एवं तीनो वचनो मे दिए गए रूपो को कण्ठस्थ कीजिए—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जयतु	जयताम्	जयन्तु
मध्यम पुरुष	जय	जयतम्	जयत
उत्तम पुरुष	जयानि	जयाव	जयाम

ख. पाठ मे प्रयुक्त क्त्वा प्रत्ययान्त शब्दो को देखिए

त्यक्त्वा — त्याग कर
दृष्ट्वा — देख कर
वञ्चयित्वा — धोखा देकर, ठग कर

ग. पाठ में प्रयुक्त तुमुन् प्रत्ययान्त शब्दों को देखिए

प्राप्तुम् — पाने के लिए
उत्थातुम् — उठने के लिए

पाठ में आए बहुवचनान्त क्रियापदों को पढ़िए

इच्छन्ति — इच्छा करते हैं।
पृच्छन्ति — पूछते है।
निवेदयन्ति — निवेदन करते है।
उत्तिष्ठन्ति — उठते है।
वदन्ति — बोलते हैं।

योग्यता विस्तार

क. **दूतस्य गुणाः** **अनुरक्त. शुचिर्दक्षः स्मृतिमान् देशकालवित्।**
वपुष्मान्वीतभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते।।

स्वामी का भक्त, पवित्र आचरण वाला, चतुर, उत्तम स्मृति वाला, स्थान और समय को पहचानने वाला, सुन्दर आकृति वाला, डर से रहित, बोलने मे चतुर दूत ही राजा द्वारा प्रशसित होता है।

ख **दूतस्य महत्त्वम्** सन्धि और विग्रह (मेल और युद्ध) दूत के ही अधीन है —

दूत एव हि संधत्ते भिनत्त्येव च संहतान्।
दूतस्तत्कुरुते कर्म भिद्यन्ते येन मानवाः।।

दूत ही जोड़ता है और जुडे हुओ को अलग–अलग कर सकता है। दूत ऐसा कार्य भी कर सकता है जिससे मनुष्यो मे फूट पड जाए।

ग. दूतस्य कर्तव्यम्

बुद्ध्वा च सर्व तत्त्वेन परराजचिकीर्षितम्।
तथा प्रयत्नमातिष्ठेद् यथात्मानं न पीडयेत्।।

दूत शत्रु राजा के मनोभाव को भली प्रकार जानकर ऐसा प्रयत्न करे जिससे अपने पक्ष को कष्ट न हो।

— *मनुस्मृति 7/64, 66, 68*



[सुभाषित *सु* और *भाषित* इन दो शब्दो से मिलकर बना है। सु का अर्थ है– शोभन, सुन्दर, अच्छा। भाषित का अर्थ है — कथन, वचन, वाक्य।

प्रस्तुत पाठ मे ऋषियो एव महाकवियो के सुन्दर वचनो का सङ्ग्रह किया गया है। इन वचनो में महापुरुषो के जीवन के अनुभव प्रकट किए गए है। ये वचन स्मरण करने तथा जीवन मे उतारने योग्य है।]

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्॥1॥
हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम्॥2॥
पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्तगतं धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम्॥3॥
नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनो जनाः।
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन॥4॥
अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतः सुखम्॥5॥
अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्॥6॥

अभिवादनशीलस्य	—	नमस्कार करने वाले के
वृद्धोपसेविनः	—	वृद्धो की सेवा करने वाले के
तस्य	—	उसके
वर्धन्ते	—	बढते हैं
श्रोत्रस्य	—	कान का
किं प्रयोजनम्	—	क्या लाभ
परहस्तगतम्	—	दूसरे के हाथ मे गया हुआ
समुत्पन्ने	—	उत्पन्न होने पर
नमन्ति	—	झुकते है
अलसस्य	—	आलसी का (को)
अष्टादशपुराणेषु	—	अठारह पुराणो (मत्स्य, मार्कण्डेय, भागवत, भविष्य, ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, वराह, वामन, विष्णु, वायु, अग्नि, नारद, पद्म, लिङ्ग, गरुड़, कूर्म, स्कन्द) मे
वचनद्वयम्	—	दो वचन
परपीडनम्	—	दूसरो को पीड़ा देना

क. **अव्यय** — प्रस्तुत पाठ मे निम्नलिखित अव्ययो का प्रयोग हुआ है

नित्यम् (प्रतिदिन) — अह नित्यं विद्यालय गच्छामि।

च (और) — राम· श्यामः मोहन च पठन्ति।

कुत (कहाँ) — अलसस्य कुतो विद्या।

कदाचन (कभी भी) — मूर्खा. न कदाचन नमन्ति।

ो के पारस्परिक सम्बन्धो को सस्कृत व्याकरण मे सम्बन्ध नाम से जाना ाह कारक नही माना जाता। हिदी व्याकरण मे इसकी भी मान्यता कारक इस सम्बन्ध को प्रकट करने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है,

पुत्रः — दशरथ का बेटा

ा और पुत्र के बीच के सम्बन्ध को, दशरथ शब्द मे प्रयुक्त षष्ठी विभक्ति केया गया है। इसी प्रकार

स्य पुरुषः — राजा का आदमी , सेवक या नौकर
त्तिकायाः घटः — मिट्टी का घडा
र्णस्य आभूषणम् — सोने का गहना

करने के लिए पाठ मे प्रयुक्त षष्ठी मे अन्त होने वाले शब्दो को देखिए

शीलस्य

नम् का अर्थ होता है — क्या लाभ? इसके साथ तृतीया विभक्ति प्रयुक्त जैसे —

प्रयोजनम् — भूषणो से क्या लाभ ?

[illegible]

1. संस्कृत मे उत्तर लिखिए

क. चत्वारि कस्य वर्धन्ते ?

ख. कण्ठस्य भूषणं किम् अस्ति ?

ग. व्यासस्य वचनद्वयम् किम् अस्ति ?

2. पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग शब्द अलग-अलग कीजिए

भूषणम्, जनाः, धनम्, माता, बाल , विद्या

3. अधोलिखित श्लोकांशों को मिलाइए

i	अभिवादनशीलस्य	क	पापाय परपीडनम्।
ii	श्रोत्रस्य भूषण शास्त्रम्	ख	अविद्यस्य कुतो धनम्।
iii	।मन्ति फलिनो वृक्षा	ग	नित्य वृद्धोपसेविन.।
iv	अलसस्य कुतो विद्या	घ	भूषणै कि प्रयोजनम्।
v	परोपकार पुण्याय	ङ	नमन्ति गुणिनो जना ।

4. रिक्त स्थानो की पूर्त्ति कीजिए

क. ____________ भूषण दान, सत्य ____________ भूषणम्।
____________ भूषण शास्त्र ____________ कि प्रयोजनम्॥

ख. अष्टादशपुराणेषु ____________ वचनद्वयम्।
परोपकार. ____________ , ____________ परपीडनम्॥

ग. पुस्तकस्था तु या ____________ , परहस्तगत ____________ ।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा ____________ न तत् ____________ ॥

घ ____________________ नित्य वृद्धोपसेविन.।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयु ____________ यशो बलम्॥



अधोलिखित सुवचनों को पढ़िए

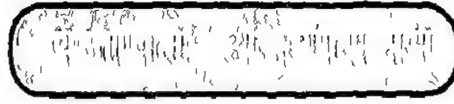
1. **मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव।** — *तैत्तिरीय उपनिषद् (शिक्षावल्ली)*
माता को देवता के समान मानो, पिता को देवता के समान मानो, आचार्य को देवता के समान मानो।

2. **सरस्वती साधयन्ती धियं नः।** ऋग्वेद (2-3-8)
सरस्वती हमारी बुद्धि को पुष्ट करती है।

3. **न स सखा यो न ददाति सख्ये।** ऋग्वेद (10-17-4)
जो अपने मित्र को नही देता वह मित्र नही है।

4. **परोपकारार्थमिदं शरीरम्।** भर्तृहरि
यह शरीर परोपकार के लिए है।

5. **न स्वातन्त्र्यसमं सौख्यम्।** पद्मपुराण (4-88-50)
स्वतन्त्रता के समान अन्य सुख नहीं है।



[यह पाठ बृहदारण्यक उपनिषद् से लिया गया है। सृष्टि के आरम्भ मे प्रजापति के तीनो पुत्र देव, मनुष्य तथा असुर – अपने-अपने हित के लिए उपदेश लेने गए। प्रजापति ने उन्हे क्रमश द द द (दम, दान एव दया) का आचरण करने की शिक्षा दी। यही इस कथा का साराश है।]

प्रजापतेः त्रयः पुत्राः–देवाः, मनुष्याः, असुराः च। एकदा देवाः प्रजापतिम् अकथयन्-अस्मभ्यम् उपदिशतु भवान्। सः तेभ्यः 'द' इति अक्षरम् अकथयत्। प्रजापतिः अपृच्छत्–ज्ञातम्? ज्ञातम्, दमं कुरु इति भवान् कथयति। ओम् इति अकथयत् प्रजापतिः।

अथ मनुष्याः तम् अकथयन्–"अस्मभ्यम् उपदिशतु भवान्।" तेभ्यः अपि-द इति अक्षरं अकथयत्। प्रजापतिः अपृच्छत्–ज्ञातम्? ज्ञातम्, दानं कुरु इति भवान् कथयति। ओम् इति अकथयत् प्रजापतिः।

अथ असुराः तम् अकथयन् अस्मभ्यम् अपि उपदिशतु भवान्। तेभ्यः अपि द इति अक्षरम् अकथयत्। प्रजापतिः अपृच्छत्–ज्ञातम्? ज्ञातम्, दयां कुरु इति कथयति भवान्। ओम् इति अकथयत् प्रजापतिः। तदेतद् एव एषा दैवी वाग् अनुवदति–द द द इति। तदेतत् त्रयं शिक्षणीयम्–दमः, दानं, दया इति।



प्रजापतेः	—	ब्रह्मा के
अनुशासनम्	—	आज्ञा, उपदेश

त्रयः	—	तीन
असुराः	—	राक्षस
तेभ्यः	—	उनके प्रति, उनके लिए
अस्मभ्यम्	—	हमारे लिए
उपदिशतु	—	उपदेश दीजिए
अकथयत्	—	कहा
भवान्	—	आप
अपृच्छत्	—	पूछा
ज्ञातम्	—	जान लिया
दमम्	—	नियन्त्रण, सयम (को)
कुरु	—	करो
कथयति	—	कहते है
ओउम्	—	हॉ
शिक्षणीयम्	—	शिक्षा देने योग्य
द	—	द अक्षर
एषा	—	यह
दैवीवाक्	—	देवताओ की वाणी, दैवी वाणी
अनुवदति	—	प्रतिध्वनित करती है

व्याकरणात्मक टिप्पणी

क. **लोट्लकार** — आज्ञा अर्थ को प्रकट करने के लिए धातुओ के लोट्लकार के रूप आप सीख चुके है। प्रस्तुत पाठ मे उपदिशतु तथा कुरु लोट्लकार के रूप है। उपदिशतु मे दिश्धातु और कुरु मे कृ धातु है।

ख. **भूतकाल** को प्रकट करने के लिए लङ्लकार का प्रयोग किया जाता है। स अकथयत् — उसने कहा। कथधातु के अन्य रूप देखिए —

कथधातु — लङ्.लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
मध्यम पुरुष	अकथय	अकथयतम्	अकथयत
उत्तम पुरुष	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओ के भी लङ्लकार मे रूप लिखे जा सकते है — प्रच्छ् (पृच्छ्), पठ्, हस्, लिख्, गम् (गच्छ) आदि ।



1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए**
   - क. देवाः, मनुष्या , असुराः च कस्य पुत्रा ?
   - ख. देवा कम् अकथयन्—उपदिशतु भवान् ?
   - ग. प्रजापति किम् अक्षरम् अवदत् ?
   - घ. दया कुरु इति अर्थ कैः ज्ञात· ?

2. **रिक्त स्थानो की पूर्त्ति कीजिए**
   - क. प्रजापति ———— ज्ञातम्?
   - ख. दमं कुरु इति ———— कथयति।
   - ग. ———— इति अकथयत् प्रजापति ।
   - घ. दैवी वाक् ———— द द द इति।

3. **क्रियाएँ जोडिए**
   - क. देवा प्रजापतिम् ———— ।
   - ख. भवान् ———— ।
   - ग. प्रजापति ———— ।
   - घ. ओम् इति ———— प्रजापति.।

4. प्रजापतेः त्रीन् उपदेशान् लिखत

क ____________

ख ____________

ग ____________

5. अधोलिखित क्रियाओं को संस्कृत में लिखिए

क (उन्होने) पूछा ____________

ख (उन्होने) कहा ____________

ग उपदेश दीजिए ____________

घ वे सब कहते है ____________

ङ तुम करो ____________

योग्यता विस्तार

क. ज्ञातम् ? ज्ञातम्।

केवल बोलने के ढग से ही शब्द के अर्थ मे अन्तर हो जाता है। लिखने मे प्रश्न अर्थ वाले कथन को प्रश्नवाचक चिह्न लगाकर और सामान्य कथन को पूर्णविराम के चिह्न द्वारा प्रकट किया जाता है।

ख. ओम् यह शब्द स्वीकृति अर्थ वाले हॉं का वाचक है।

ग. इस पाठ मे केवल एक अक्षर से ही प्रजापति ने तीनो — देवताओ, मनुष्यो और राक्षसो को उपदेश दिया और उन्होने अपनी-अपनी प्रकृति की आवश्यकता के अनुसार उसका अर्थ समझा। वाणी की सारगर्भितता उपनिषद् शैली की विशेषता है, इस कहानी से यह बात प्रमाणित होती है।

घ. दैवी वाणी भी बादलो के रूप मे द-द-द कहती हुई, उसी उपदेश की पुनरावृत्ति करती है।

ङ. इस पाठ में तीनो लकारों का प्रयोग देखिए—

लट्	लोट्	लङ्
कथयति	उपदिशतु	अकथयत्
अनुवदति	कुरु	अपृच्छत्

[illegible]

[illegible]

[सरदार पटेल आधुनिक भारत के स्रष्टा थे। इन्होने छोटी-छोटी 600 स्वदेशी रियासतो को मिलाकर भारत को एक सुदृढ राष्ट्र के रूप मे खडा किया। इसीलिए इन्हे लौहपुरुष कहा जाता है। सरदार पटेल की निष्ठा, राजनीतिज्ञता और दृढ इच्छा शक्ति से ही भारत का वर्तमान स्वरूप बन पाया।]



लौहपुरुषः सरदारवल्लभभाईपटेलः जन्मतः कृषकः आसीत्। अस्य जन्म 1875 तमे ईस्वीये वर्षे अक्तूबरमासस्य एकत्रिंशत् (31) तारिकायां गुर्जरप्रदेशे अभवत्। अस्य पिता 1857 वर्षस्य प्रथमस्वतन्त्रतायुद्धे सहभागी आसीत्। यद्यपि अयं महापुरुषः आङ्लदेशात् विधिपरीक्षायां प्रथमश्रेण्यां प्रथमं स्थानं लब्ध्वा अधिवक्ता जातः, तथापि सः स्वकीयं सम्पूर्णजीवनं भारतस्य स्वतन्त्रता-संग्रामाय अर्पितवान्। अयं बारदोली-कृषकाणाम् आन्दोलनस्य सफलं नेतृत्वम् अकरोत्। तेन कारणेन महात्मना गान्धिना "सरदार" इति उपाधिना सम्मानितः। गुर्जरप्रदेशे जलौघ-पीडितानां भूकम्पपीडितानां च एषः अहर्निशं सेवाम् अकरोत्।

अनेकवारं सः कारागारे पातितः। तस्य वृद्धा माता आङ्लाधिकारिभिः प्रताडिता। 1942 तमे वर्षे "भारतं त्यजत" इति आन्दोलने स अकथयत्–न केवलं भारतं त्यजत अपितु एशियामेव त्यजत इति वक्तव्यम्।

स्वतन्त्रभारतस्य स उपप्रधानमन्त्री अभवत्। भारतं तदा अनेकेषु लघुराज्येषु विभक्तम् आसीत्। एषः स्वनीतिचातुर्येण षट्शतस्वदेशीयराज्यानाम् अखण्डे भारते विलयम् अकरोत्।

लौहपुरुषः श्रीपटेलः अतीव अनुशासनप्रियः आसीत्। तस्य प्रत्येकं शब्दः आदेश इव मन्यते। भारतम् एव तस्य क्षेत्रं, समस्तभारतजनता एव तस्य परिवारः। भारतस्य वर्तमानं स्वरूपं तस्य एव सत्प्रयत्नानां परिणामः। अस्माकं दुर्भाग्यवशात् 1950 तमे वर्षे दिसम्बरमासस्य पञ्चदशतारिकायां अयं लोकमान्यः दिवं गतः। भारतं तस्य उपकारं कदापि न विस्मरिष्यति।

शब्दार्थाः

तारिकायाम् — तिथि मे
प्रथमस्वतन्त्रतायुद्धे — पहली आजादी की लडाई मे
आङ्ग्लदेशात् — इंग्लैण्ड मे
प्रथमश्रेण्याम् — प्रथम श्रेणी में
प्रथमं स्थानं — पहला स्थान
लब्ध्वा — प्राप्त करके
अधिवक्ता — वकील
जातः — बने
अर्पितवान् — अर्पित किया
उपाधिना — उपाधि से
जलौघपीडितानाम् — बाढ से पीडितो की
भूकम्पपीडितानाम् — भूकम्प से पीडितो की
अहर्निशम् — रात-दिन
पातितः — डाल दिए गए
आङ्ग्लाधिकारिभिः — अग्रेज अधिकारियो द्वारा
प्रताडिता — सताई गई

त्यजत	—	छोड़ दो
वक्तव्यम्	—	कहना चाहिए
लघुराज्येषु	—	छोटे राज्यो मे
षट्शतराज्यानाम्	—	600 रियासतो का
मन्यते स्म	—	माना जाता था
क्षेत्रम्	—	खेत
सत्प्रयत्नानाम्	—	सत् प्रयत्नों का
परिणामः	—	परिणाम
पञ्चदशतारिकायाम्	—	15 तारीख मे
दिवं गतः	—	मृत्यु को प्राप्त हुए

व्याकरणात्मक टिप्पणी

क. जन्मत. (जन्म से) इस शब्द मे तसिल् प्रत्यय जुड़ा है। इसका केवल त. बचता है। इसका अर्थ होता है "से"।

काशीत. — काशी से
अयोध्यात. — अयोध्या से

ख . 1 **अहर्निशम्** — अहः च निशा च। यहाँ समाहार द्वन्द्व समास है। इसके फिर आगे रूप नही चलते।

प्रत्येकम् — एकम् एक प्रति, यहाँ अव्ययीभाव समास है। यह भी समस्त पद अव्यय बन जाता है। इसके भी फिर रूप नहीं चलते।

2 **स्वतन्त्रभारतम्** — स्वतन्त्र भारतम्। विशेषण-विशेष्य मिल कर कर्मधारय समास बन जाता है।

3 **समस्तभारतजनता** — समस्त भारतम् समस्तभारतम्, भारतस्य जनता भारतजनता, समस्ता भारतजनता इति समस्तभारतजनता।

अभ्यासः

1. अधोलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखिए

क. सरदारपटेल कस्मै स्वजीवन समर्पितवान्?

ख. सरदारपटेल अनेकवार कुत्र पातित ?

ग. एष कति स्वदेशीयराज्यानां विलय भारते अकरोत्?

घ. क. देश तस्य क्षेत्रम् आसीत्?

2. विशेषणों द्वारा अधोलिखित रिक्त स्थान पूर्त्ति कीजिए

क. तस्य —————— माता आङ्ग्लाधिकारिभि प्रताडिता।

ख. लौहपुरुष श्रीपटेल अतीव —————— आसीत्।

ग. भारतस्य —————— स्वरूप तस्य एव सत्प्रयत्नाना परिणाम.।

घ. तेन कारणेन —————— गान्धिना सरदार इति उपाधिना विभूषित.।

3. अधोलिखित तिथियों के साथ घटनाओं का मिलान कीजिए

	तिथि	**घटना**
क.	31 अक्तूबर, 1875	प्रथम· स्वतन्त्रतासंग्राम
ख.	15 दिसबर, 1950	श्रीपटेलस्य जन्म
ग.	9 अगस्त 1942	'भारत त्यजत' आन्दोलनम्
घ.	1857	श्रीपटेलस्य निधनम्

4. अधोलिखित लड्‌लकार की क्रियाओं के अर्थ लिखिए

आसीत् — ——————

अकथयत् — ——————

अकरोत् — ——————

अभवत् — ——————

5. अधोलिखित वाक्यों में **यद्यपि** और **तथापि** जोडिए

यथा ———— **यद्यपि** सः अधिवक्ता **तथापि** स्वतन्त्रतासग्रामे जीवनम् अर्पितवान्।

क ———— वृष्टि भवति,———— अहम् विद्यालयं गमिष्यामि।

ख ———— श्रीपटेल. राम्प्रति न अस्ति ———— यश कायेन स अद्यापि जीवति।

ग ———— स कारागारे पातित ———— स देशसेवा न अत्यजत्।

घ ———— श्रीपटेल अनुशासनप्रिय ———— स कोमलहृदय आसीत्।

योग्यता विस्तार

क. 1928 मे अग्रेजी सरकार ने बारदोली के किसानो की ज़मीनो का कर 25% बढ़ाना चाहा। इसके विरुद्ध श्री पटेल ने आन्दोलन का नेतृत्व किया। अग्रेजो ने अमानवीय अत्याचार किए।

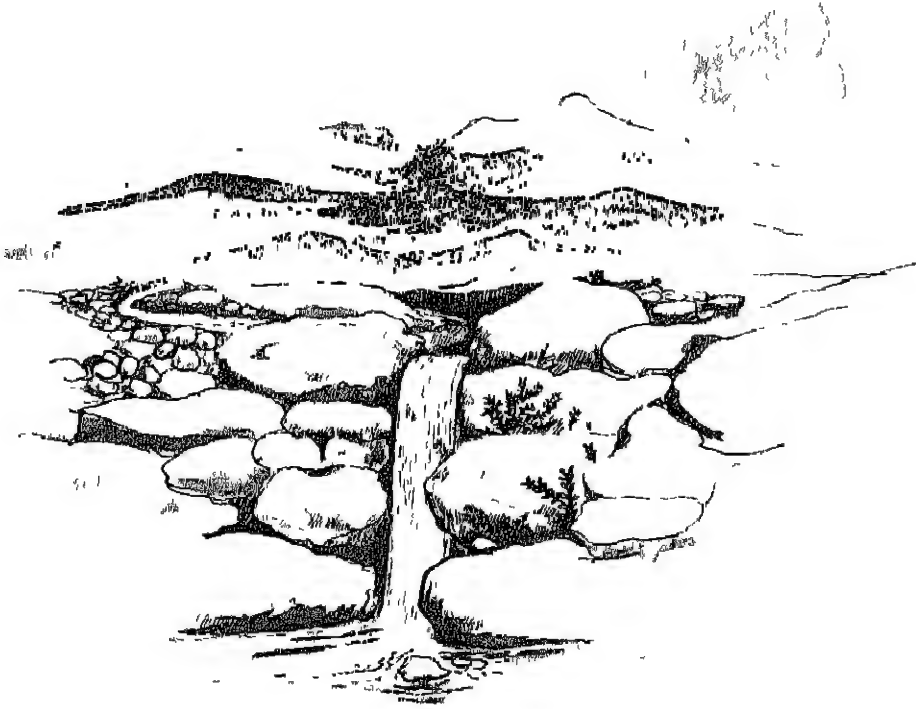
ख. भारत छोटी-छोटी रियासतो मे बटा हुआ था। जोधपुर मे सरदार पटेल ने जमीदारो को समझाया — भलाई इसी मे है कि जमीदार स्वय अपनी जमीने छोड दे अन्यथा भारत असख्य टुकड़ो मे बट जाएगा। अन्त मे स्वतन्त्रता के द्वितीय वर्ष मे ही 600 रियासतो का विलय भारत मे हो गया।

ग. श्री पटेल के सम्मान मे भारतीय डाकतार विभाग द्वारा चित्राङ्कित डाक-टिकट भी जारी किया गया।

पञ्चमः पाठः

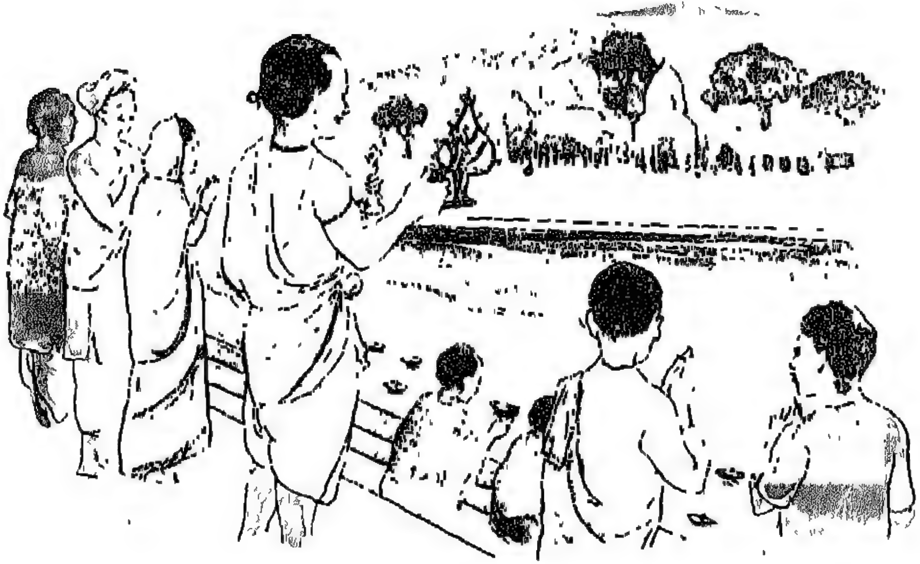


[गङ्गा भारत की बहुमूल्य संस्कृति की अनन्यतम प्रतीक है। यह हिमालय से निकलकर भारत के विशाल भूभाग को सींचती हुई गङ्गा सागर मे जाकर विलीन हो जाती है। गङ्गा की महिमा रामायण, महाभारत एव वेद-पुराणादि सभी ग्रन्थो मे गाई गई है।]



गङ्गा भारतस्य पवित्रतमा नदी। गङ्गा हिमालयात् निस्सरति। भगीरथः गङ्गां महता प्रयत्नेन भूतले आनयत्। महादेवः शिवः गङ्गां शिरसि धारयति। देवप्रयागे भागीरथ्या सह अलकनन्दा मिलति। ततः परम् अस्याः नाम गङ्गा भवति।

हरिद्वारे सन्ध्याकाले गङ्गायाः नीराजना भवति। तदनन्तरं भक्तजनाः सहस्रशः दीपकान् गङ्गायां प्रवाहयन्ति। नूनम् अद्भुतं तत्र दृश्यम्। विश्वस्य विविधभागेभ्यः जनाः तत् द्रष्टुम् आगच्छन्ति।



गङ्गायाः तटे एव प्रयागः। अत्र यमुना सरस्वती च गङ्गया सह मिलतः। सरस्वती इदानी लुप्ता अस्ति। प्रयागे गङ्गायां स्नानं पुण्यमयम् अस्ति।

प्रयागतः अग्रे इयं गङ्गा न केवलं भारतस्य अपितु निखिलविश्वस्य पुण्यतमां तीर्थनगरी काशी प्रविशति, धन्यतमा च भवति।

गङ्गायाः जलं कदापि दूषितं न भवति। अस्याः दर्शनं पुण्यम्। पुण्यतमायै गङ्गायै नमः।

शब्दार्थाः

पवित्रतमा	—	सबसे पवित्र
निस्सरति	—	निकलती है
महता	—	अत्यधिक
भूतले	—	पृथ्वी पर
शिरसि	—	सिर पर
धारयति	—	(शिव) धारण करते है
प्रवाहयन्ति	—	प्रवाहित करते है।
देवप्रयाग	—	हिमालय पर एक स्थान
सन्ध्याकाले	—	शाम के समय
नीराजना	—	आरती
विविधभागेभ्य.	—	विभिन्न भागो से
तटे	—	किनारे पर
लुप्ता	—	खो गई
द्रष्टुम्	—	देखने के लिए
प्रयागतः अग्रे	—	प्रयाग से आगे
निखिल	—	सम्पूर्ण
प्रविशति	—	प्रवेश करती है
धन्यतमा	—	अधिक धन्य
ततः परम्	—	इसके पश्चात्
सहस्त्रशः	—	हजारो
नूनम्	—	निश्चय से
कदापि	—	कभी भी
दूषितम्	—	दोष युक्त
पुण्यम्	—	पवित्र
पुण्यतमायै गङ्गायै नमः	—	अत्यधिक पवित्र गङ्गा को नमस्कार

व्याकरणात्मक टिप्पणी

जिन शब्दो के अन्त मे आ होता है उन्हे आकारान्त कहते है। इस पाठ में गङ्गा , यमुना शब्द आकारान्त है। गङ्गा शब्द के रूप विभिन्न विभक्तियो और वचनो मे इस प्रकार चलते हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गङ्गा	गङ्गे	गङ्गा
द्वितीया	गङ्गाम्	"	"
तृतीया	गङ्गया	गङ्गाभ्याम्	गङ्गाभिः
चतुर्थी	गङ्गायै	"	गङ्गाभ्य
पञ्चमी	गङ्गाया	"	गङ्गाभ्यः
षष्ठी	"	गङ्गयो.	गङ्गानाम्
सप्तमी	गङ्गायाम्	"	गङ्गासु
सम्बोधन	हे गङ्गे	हे गङ्गे	हे गङ्गा

अभ्यासः

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए**

क गङ्गा कुत निस्सरति ?

ख. क गङ्गा महता प्रयत्नेन भूतले आनयत्?

ग गङ्गायाः नीराजना कुत्र भवति ?

घ भागीरथ्या सह अलकनन्दा कुत्र मिलति?

2. **अधोलिखित स्थानो को गङ्गा के प्रवाह के क्रम से लिखिए**

प्रयाग॰, देवप्रयाग॰, हरिद्वारम्, हिमालय ।

3. **रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए**

क. जनाः सहस्रश. दीपकान् ·· ·· ·· ·· प्रवाहयन्ति।

ख. ··· ·· ····· जल कदापि दूषित न भवति।

ग. ······ · ··· · नमः।

घ. यमुना · · ·· ······· · सह मिलति।

4. **निम्नलिखित हिंदी शब्दों के स्थान पर संस्कृत शब्द लिखिए—**
आरती, पृथ्वी पर, सिर पर, हजारो दीपको को।

योग्यता विस्तार

परमपूज्य श्री शङ्कराचार्य द्वारा विरचित इस गङ्गा महिमा को कण्ठस्थ कीजिए और गाइए –

देवि सुरेश्वरि भगवति गङ्गे !
त्रिभुवनतारिणि ! तरलतरङ्गे !
शङ्करमौलिनिवासिनि ! विमले !
मम मतिरास्तां तव पदकमले।।
भागीरथि ! सुखदायिनि ! मात –
स्तव जलमहिमा निगमे ख्यातः।
नाऽहं जाने तव महिमानं
पाहि कृपामयि ! मामज्ञानम्।।

दशमः पाठः



[प्रस्तुत पाठ गेय है। हम अभिमानी न बने, स्वय भी प्रसन्न रहे और ससार मे भी प्रसन्नता ही फैलाएँ। दीन-दु खियो और अनाथो का सहारा बने— यही इस गीत का भाव है। आइए इसे स्वर और लय सहित गाएँ–]

मा कुरु दर्प मा कुरु गर्वम्,
मा भव मानी, मानय सर्वम्।
मा भज दैन्यं, मा भज शोकम्,
मुदितमना भव मोदय लोकम्॥

मा वद मिथ्यां मा वद व्यर्थम्,
न चल कुमार्गे, न कुरु अनर्थम्॥
पाहि अनाथं, पालय दीनम्,
लालय जननीजनकविहीनम्॥

शब्दार्थाः

मा	—	मत
दर्पम्	—	घमण्ड (को)
भव	—	बनो
मानी	—	अभिमानी

मानय	—	आदर करो
दैन्यम्	—	दीनता क॑,ा
भज	—	ग्रहण, करो
मुदितमना	—	प्रसन्न मन वाले
मोदय	—	प्रसन्न करो
मिथ्या	—	झूठ
व्यर्थम्	—	सारहीन, फज़ूल
पाहि	—	रक्षा करो
जननीजनकविहीनम्	—	माता-पिता से वञ्चित

व्याकरणात्मक टिप्पणी

क. **मा** अव्यय **मत** के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

ख. कर्म मे द्वितीया विभक्ति लगाते है, जैसे —
दर्प मा कुरु — घमण्ड मत करो।
गर्व मा कुरु — अभिमान मत करो।

ग. मिथ्या, व्यर्थम्, मा, न इत्यादि शब्द अव्यय हैं।

घ. कुरु, भव, मानय, भज, मोदय, वद, चल, पाहि, पालय, लालय — ये सभी शब्द लोट् लकार में हैं।

अभ्यासः

1. अधोलिखित वाक्यों में कर्म जोड़िए

क. ____________________ मोदय।

ख. ____________________ पाहि।

ग. ____________________ पालय।

घ. ____________________ मानय।

2. अधोलिखित शब्दों को विलोम शब्दों के साथ मिलाइए

i	सनाथ	क	शोक
ii	सुमार्ग.	ख	मिथ्या
iii	हर्ष	ग	अनाथ.
iv	सत्यम्	घ	मानी
v	नम्र	ङ	कुमार्ग

3. अधोलिखित वाक्यों में अव्यय पद भरिए

मिथ्या ―――――――― वद।

कुमार्गे ―――――――― चल।

―――――――― मा वद।

दर्प ―――――――― कुरु।

4. अधोलिखित पङ्क्तियो को गीत के क्रम से लिखिए

क लालय जननीजनकविहीनम्।

ख. मा भज दैन्य मा भज शोकम्।

ग. मा भव मानी मानय सर्वम्।

घ. पाहि अनाथ, पालय दीनम्।

ङ. मा कुरू दर्प, मा कुरु गर्वम्।

च. मुदितमना भव मोदय लोकम्।

छ. न चल कुमार्गे न कुरु अनर्थम्।

ज. मा वद मिथ्या मा वद व्यर्थम्।

5. पाठ मे प्रयुक्त कर्म-पदों को रेखाङ्कित कीजिए

26. Identify the program utilizing role playing technique for V.H.L.	Demonstrate skills in utilizing role playing techniques.	1 2 3 4 5
27. Identify the problem involved in visual tests (textbooks, exercises, diagrams etc.) for textual reading.	Create the visual tests for textile reading.	1 2 3 4 5
28. Identify and evaluate point material for specific V.H.L. and plan necessary adjustment for ease in reading.	Modify visual material, enlarge and simplifying to render comfortable and intelligible, copies for specified learners.	1 2 3 4 5
29. Identify the various devices suitable for visually handicapped learners.	Demonstrate ability to use and evaluate devices.	1 2 3 4 5
30. Identify the skills in use of abacus by solving problems for visually handicapped learners	Demonstrate skills in use of abacus by solving problems in all basic operation.	1 2 3 4 5
31. Operate and care for recording devices and listening equipment.	Select and/or prepare evaluate recorded materials.	1 2 3 4 5

32.	Operate and care for braille writers, typewriters, slate and stylus, handwriting devices, screen board, raised line drawing kit of writing instruments for visually handicapped children.	Prepare/evaluate the production of written materials with all devices.	1 2 3 4 5
33.	Identify the technical aids for the production and reproduction of materials.	Demonstrate use and care of the technical aids.	1 2 3 4 5
34.	Identify and transmit proficiency in use of media devices necessary for the education of the visually handicapped learners.	Transmit proficiency in use of media and devices necessary for the education of visually handicapped children.	1 2 3 4 5
35.	Identify the basic principles for selection and development of instructional strategies that are applicable for V.H.L.	Selected instructional strategies using basic principles of instruction for learners. Demonstrate to peer.	1 2 3 4 5

36. Identify/select the appropriate instructional strategies for teaching subject area content for visually handicapped children.	Specify strategies for instructive of a given case study and subject area. Demonstrate to Peers.	1 2 3 4 5
37. Demonstrate ability to transmit the basic principles of instructional strategies for V.H.L. to other school personnel, parents & community worker.	Through simulation with peers and supervised practicum experiences.	1 2 3 4 5
38. Identify the utilization of instruction media for visually handicapped children in terms of sensory modalities visual tactile and auditory which they operate.	Analysis operation of a specific piece of media equipments in relation to learning by V.H. and demonstrate its use to peers.	1 2 3 4 5
39. Determine source for media specified especially for visually handicapped learners.	Prepare lists of source and complete other forms for obtaining selected instructional purpose for hypothetical situations	1 2 3 4 5

40. Identify source of existing standards for the production of sound recorded braille print, trangible aids, illustration etc. for visually handicapped children.	Demonstrate and simulated in practicum experiences used and scoring of media.	1 2 3 4 5
41. Identify principles of media development in content areas.	Select appropriate media for a concept to be taught in a subject area. Demonstrate through simulation in practicum situation.	1 2 3 4 5
42. Assist visually handicapped learners and parents to understand the principles of use of media in education	Develop and implant a plan to provide visually handicapped children, and their parents with information about the principles involved in the use and selection of educational media.	1 2 3 4 5

43. Identify sources for repair of media for visually handicapped learners.	Given a list of media for V. H. needing repairs arrangement to be made for repairs of each.	1 2 3 4 5
44. Identify potential strengths of an individual visually handicapped learner as a result of appropriate guidance programs.	Observe record strengths of a specific learners.	1 2 3 4 5
45. Involve inter-professional personnel individual needs of the visually handicapped learners.	Involve inter-professional personnel meeting the needs of a specific visually handicapped children while in field practice and under supervision.	1 2 3 4 5
46. Provide for appropriate guidance services for parents and families of visually handicapped learners.	Survey the local, state level or guidance services and resources for visually handicapped children.	1 2 3 4 5

47. Identify needs of visually handicapped learners p[illegible] relationship with others in the community.	Provide plan to specific o[illegible]tunities for im[illegible] and changes.	1 2 3 4 5
48. Evaluate the relationship between visually handicapped learner and family member.	Analyse case studies observation and apply evaluation techniques.	1 2 3 4 5
49. Identify strategies to encourage continuation of educational goals in the home.	Analyses case studies and observation.	1 2 3 4 5
50. Identify the specific types of agency which effect the visually handicapped learner and provides the economic basis for the services.	Through meet agency personnel	1 2 3 4 5
51. Select appropriate community groups which effect the delivery of services to the visually handicapped learners.	Document evidence of active agency participation for designated period of time.	1 2 3 4 5

52. Describe the procedures for developing community resources and volunteers who serve the visually handicapped learner.	Identify the appropriate voluntary organization and services	1 2 3 4 5
53. Identify and formulate a philosophy regarding visually handicapped learner which is consistent with current practices and professional standards of the field.	Through a statement of philosophy citing references and research.	1 2 3 4 5
54. Identify the problems, issues and public policy related to the education of visually handicapped children.	Become involved in civics and legislative process and knowledge of current policies.	1 2 3 4 5
55. Identify the need of advocacy for the visually handicapped.	Demonstrate through simulation the advocacy for visually handicapped children.	1 2 3 4 5
56. Develop strategies for the acceptable of the visually handicapped child by peers, staff and administration.	Demonstrate the strategies for peers, staff and others for visually handicapped children.	1 2 3 4 5

57. Identify the various organisational plans for school programme in relation to specific need of individual visually handicapped learners.	Analyse strengths and weaknesses of various organisational plans for specific visually handicapped learners.	1 2 3 4 5
58. Identify the necessary abilities to engage in mainstreaming process to school parent and community worker.	Transmit the necessary abilities to engage in the mainstreaming process to others.	1 2 3 4 5
59. Identify the values proposes and techniques of writing behavioural objectives for visually handicapped learners.	Through written criteria for visually handicapped learners when given behavioural objectives.	1 2 3 4 5
60. Identify the specific aspects of an on-going program and to make plans for bringing programme element into harmony with those standards.	Prepare a plan for program modification to meet standards for a particular program.	1 2 3 4 5
61. Identify/transmit the demonstrate knowledge of evaluation criteria to other school personnels etc.	Transmit knowledge of evaluate criteria etc.	1 2 3 4 5

APPENDIX - III

LIST OF INSTITUTIONS COVERED

1. Model School for the Blind, National Institute for the Visually Handicapped Dehradun
2. Rastriya Virjanand Andha Kanya Vidyalaya New Delhi
3. Sri Ramakrishna Mission Vidyalaya Coimbatore
4. Sharp Memorial School Dehradun.
5. JPM Senior Secondary School New Delhi
6. President Estate Senior Secondary School New Delhi